IJAER/May-June 2017 /Volume-5/Issue-6 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थीयों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन

तबस्सुम खातून

शोध छात्र

गुरु जंभेश्वर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

हिसार हरियाणा

डॉ निलमा कुंवर

डीन ऑफ कॉलेज ऑफ एजुकेशन

गुरु जंभेश्वर यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी

हिसार हरियाणा

सार

आज उच्च शिक्षा विद्यार्थियों के सहायतार्थ प्रिन्ट मीडिया क साथ इलेक्ट्रानिक मीडिया में रेडियो, टेलीविजन, ऑडियो–विडियो कैसेट्स एवं सी0डी0 फिल्मस्, वीडियों ग्राफिक्स, एनिमेषन, इन्टरऐक्टिव टी0वी0, कान्फ्रेंसिंग, वेब आधारित जनसंचार माध्यम उपलब्ध है। जनसंचार का अर्थ जनता के बीच विभिन्न माध्यमों से किया जाने वाला संचार है। जनसंचार का वर्तमान समय इसके परिपक्व समाज की मनोदषा, विचार, संस्कृति आम जीवन दषाओं को नियंत्रित व निदेषित कर रहा है। इसका प्रवाह अति व्यापक एवं असीमित है। जनसंचार माध्यमों द्वारा समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अधिक से अधिक अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हो रहा है। स्वतंत्र जनसंचार माध्यम लोकतंत्र की आधारषिला है। अर्थात जिस देष में जनसंचार के माध्यम स्वतंत्र नहीं है वहां एक स्वतंत्र लोकतंत्र का निर्माण होना संभव नहीं है। जनसंचार माध्यमों का जाल इतना व्यापक है कि इसके बिा एक सभ्य समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। हालांकि जनसंचार माध्यमों में हाल ही कुछ वर्षों में एक क्रांति का उदय हुआ है जिसे हम संचार क्रांति कहते हैं। जनसंचार माध्यमों में क्रांति के साथ–साथ सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी क्रांति आई है। जिसने मॉर्सल मैक्लुहान के वकतव्य को पूर्णतः सत्य कर दिया कि संपूर्ण दुनिया एक गॉव में तब्दील हो जाएगी।

मुख्य शब्दः *विद्यार्थी* , दूर संचार माध्यमों

परिचय

मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है शिक्षा की प्रक्रिया सम्भवतः उतनी ही पूरानी है जितना स्वयं मानव जीवन। शिक्षा देने और ग्रहण करने का कार्य आदि काल से ही किसी न किसी रूप में चला आ रहा है। शिक्षा शास्त्री विलियम व्यायड के शब्दों में–"ऐतिहासिक काल से बहुत पहले मानव जब धीरे–धीरे जंगली जीवन छोड़कर, सामाजिक जीवन की और बढ़ रहा है , सीखने का कार्य निष्चित ही अधिक अंष में अनुभव और अनुकरण पर आश्रित था। किन्तु प्रस्तर युग में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्थित शिक्षा थी। इसका आभास उस काल से सम्बन्धित पषुओं के उन सुन्दर चित्रों से मिलता है। जो सींगों पर हाथी दाँत या गुफा की दीवारों पर खुदे हुए पाये गये हैं। " इस प्रकार शिक्षा का इतिहास मनुष्य के साथ जुड़ा हुआ है। शिक्षा की प्रक्रिया द्वारा ही मनुष्य के आचार–विचार तथा रहन–सहन में परिर्वतन परिमार्जन सम्भव हुआ है। आदि मानव के जीवन की तुलना में आज के मानव के सभ्य और सुसंस्कृत जीवन का श्रेय शिक्षा को ही दिया जाता है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान को मनुष्य के तीसरे नेत्र के रूप में स्वीकार करती है– "ज्ञानं तृतीय मनुजस्य नेत्रं।" शिक्षा द्वारा ही मनुष्य को ज्ञान की प्राप्ति तथा बुद्धि का परिमार्जन होता है। शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य विवेकषील

प्राणी के रूप में अन्य समस्त प्राणियों से विषिष्ट और सर्वोत्क्ष्ट स्थान प्राप्त कर सका है। शिक्षा अपने परिष्कृत एवं शुद्ध रूप में मानव को विवेकषील बनाती है। शिक्षा के माध्यम से ही संसार की वैज्ञानिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यामिक उन्नति सम्भव हुई है। शिक्षा व्यक्ति के लिए वह पौष्टिक भोजन है, जिससे उसका शारीरिक, मानसिक, भावात्मक तथा अध्यात्मिक विकास होता है। जॉन डी0वी0 के शब्दों में "भोजन की जो महत्ता और उपयोगिता शरीर के लिए। वही शिक्षा की सामाजिक जीवन के लिए है।" मानव जीवन में शिक्षा का महत्व बतलाते हुए लॉक कहते हैं "जिस प्रकार पौधों का विका खेत की अच्छी जुताई से होता है, उस प्रकार मनुष्य का विकास शिक्षा द्वारा होता है।" शिक्षा आजीवन चलेन वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जीवन में जिन व्यक्तियों और प्राणियों के सम्पर्क में आता है, उनसे कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अथवा बालक के सर्वागीण विकास तथा सामाजीकरण की कल्पना भी नहीं का जा सकती । क्रो एवं क्रो शिक्षा के महत्व पर प्रकाष डालते हुए कहते हैं कि "शिक्षा व्यक्तिकरण उन्नति तथा समाजोपयोगिता को बढ़ावा देती है।"

उद्देश्य

1ण उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूरसंचार माध्यमों में प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2ण उच्च शिक्षा में अध्ययनरत परम्परागत एवं तकनीकी विषयों कें विद्धार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

उच्च शिक्षा

उच्च शिक्षा का अर्थ है विष्वविद्यालयों, व्यावसायिक विष्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयों लिबरत आर्ट कोलजों एवं प्रौद्योगिकी संस्थानों आदि के द्वारा दी जाने वाली शिक्षा से है।

दूर संचार माध्यम

शिक्षा में दूर संचार माध्यम का तात्पर्य शिक्षा मे तकनीकी एवं सूसचना जैसे–टी0वी0, कम्प्युटर, इन्टरनेट, मोबाइल आदि के प्रयोग से है।

शैक्षिक उन्मुखीकरण

शैक्षिक उन्मुखीकरण का तात्पर्य शिक्षा के प्रति रूचि एवं लगाव से है। शैक्षिक उन्मुखीकरण षिक्ष के प्रति झुकाव का बढ़ना है। जिसके द्वारा विद्यार्थी शिक्षा के प्रति आकर्षित होते हैं तथा उनकी शिक्षा प्राप्त करने में रूचि बढ़ती है।

संचार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर एक दूसरे के साथ अपनी भाव–भावनाओं एंव अनुभवों को बांटकर ही वह अपना आत्मिक और मानसिक विकास कर पाता है। मनुष्य को जन्म से ही मिल बांटने एवं दूसरों के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है। इसी जिज्ञासापूर्ति के लिए प्रतयेक व्यक्ति अपने जीवन का अधिकांष हिस्सा 'संचार' करने मे अर्थात बोलने, सुनने, सोचने, देखने, पढ़ने–लिखने या विचार–विमर्ष करने में लगाता है। अतः कहा जा सकता है कि मानवी हाव–भाव, संकेतों और वाणी के माध्यम से सूचनाओं का आदान–प्रदान करना ही 'संचार' कहलाता है।

"संचार का सामान्य अर्थ है 'बहना', 'चलना' अर्थात किससी सूचसना या जाानकारी को दूसरों तक पहुँचाना। अंग्रेजी मे संचार के लिए Communication शब्द का प्रयोग होता है, जिसका अर्थ है 'बढ़ना', 'बाँटना' या 'फैलाना'।" संक्षेप में यदि कहना हो तो, कहा जा सकता है कि सूचना, विचारों और अभिवृत्तियों को एक दूसरे व्यक्ति तक सम्प्रेषित करने की कला का नाम ही 'संचाार' है।

वस्तुतः संचार के अन्तर्गत अनुभवों का आदान–प्रदान किया जाता है। यह आपस में होने वाली बातचीत की प्रक्रिया ही है। मानवी समाज के संचालन की समस्त प्रक्रिया सफल रूप से घटित होने के लिए संचारक, संदेष व प्रापक इन तीनों का होना अनिवार्य हे। संचार को अधिक प्रभावी बनाने के लिए 'माध्यम' का अपना ही महत्व है, जिसे अंग्रेजी मे 'मीडिया' कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला संदेष को अधिक प्रभावी रूप से संप्रेषित करने के लिए संचारक तथा प्रापक जिस मायम का सहारा लेते हैं, वह 'संचार माध्यम' कहलाता है। अतः कहा जा सकता है कि व्यक्ति, जाति अथवा राष्ट्र का सर्वागीण विकास 'संचार' और 'संचार माध्यमों' पर ही आधारित होता है।

"संचार की परिभाशा

"संचार शब्द संस्कृत के 'चर' अथवा ष्आगे बढ़नाष् और ष्समष् उपसर्ग ष्सम्यकष् आचारण का बोध करता है। अतः सम्यक रूप से चलना या बढ़ना 'संचार' कहलाता हे।" वर्तमान में ष्संचारष् शब्द (Communication) शब्द का पर्याय है। यह शब्द लैटिन भाषा के ब्वउउनपे से बना है, जिसका अर्थ है "To make common, to share to imprt to transmit अर्थात सूचनाओं के आदान प्रदान से समान भागीदारी निर्मित करना संचार का उद्देष्य है।श संचारका सामान्य अभिप्रायः लोगों का आपस में विचार, ज्ञान तथा भावनाओं का कुछ संकेतों के द्वारा आदान–प्रदान है।

"संचार का कार्य

स्ंचार किसी भी व्यक्ति एंव समाज के विकास के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। संचार एक गतिषील प्रक्रिया है जो एक दूसरे के साथ सम्बन्ध जोड़ने मे अत्यन्त सहायक होती है। "एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से, एक समूह को दूसरे समूह से और एक देष को दूसरे देष से जोड़ना संचार का कार्य है।" संचार सामाजिक पास्परिक क्रिया की प्रक्रिया होती है। निःसन्देह संचार का महतव मौलिक है। समाज में संचार की क्रिया और उसका कार्य किस प्रकार होता है, इसका विवेचन निम्न प्रकार है–

सूचना एवं जानकारी

समाजिक चेतना एवं जनजागृति के लिए समाज में विभिन्न माध्यमों का उपयोग किया जाता है। जैसे किसी विषय पर विचार, संदेष, तथा एवं चित्रों के माध्यम से लोगों का ध्यानकर्षित कर उन्हें जागृत किया जाता है। पर्यावरण का प्रष्न हो या देष के विविध विषय एवं परिस्थितियाँ हों, जनता से अवगत कराने के लिए संचार के माध्यम से सूचना एवं जानकारी को एक दूसरे तक पहुँचाया जाता है।

समाजीकरण

संचार के कारण ही व्यक्ति, समूह तथा समाज का विकास होता है। व्यक्ति अपने आंतरिक भाव–भावनाओं को एक दूसरे तक संप्रेषित करके ही अन्य लोगों को अपने सुख–दुखों का भागीदा बनाता है। इस प्रक्रिया में वह समाज का

अभिन्न अंग बनकर सुखकर जीवन जी पाता है। इस प्रकार संचार से व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन में सक्रियता से सम्मिलित होने का अवसर मिलता है।

संचार प्रेरक का कार्य करता है:–

संचार के द्वारा व्यक्ति हमेषा प्रेरित होते रहता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वभावः जिज्ञासु होता है, और जब संचार के द्वारा विविध प्रकार की जानकारी उसके पास पहुँचती है, तो उसकी जानने की ललक और भी तीव्र हो जाती है। परिणामतः उसकी सुप्त इच्छाएँ, आकांक्षाएँ जिसे प्राप्त करने के लिए वह प्रेरित हो जाता है।

शिक्षा

संचार के माध्यम से बौद्धिक कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है। जिससे व्यक्तियों का बौद्धिक विकास तथा चरित्र निर्माण संभव होता है। शिक्षा के माध्यम से जीवन कलामय होता है और जीवन के सभी चरणों मे उपयुक्त योग्यता का विकास होता है।

सांस्कृतिक विकास

संचार के माध्यम से सांस्कृति तथा कलात्मक रचनाओं के प्रसार द्वारा अतीत की गौरवषाली परम्परा को बनाए रखने मे सहायता मिलती है। संस्कृति का विकास यानी व्यक्ति का अपना विकास होता है। संचार के द्वारा व्यक्ति के भीतर की सृजनात्मक शक्ति को प्रोत्साहन मिलता है, जिससे व्यक्ति अपनी शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाता है।

मनोरजन

व्यक्ति की मानसिक थकान को दूर कर उसे पुनः तरोताजा करने का कार्य दूरसंचार करता है। नाटक, नृत्य, कला, साहित्य, संगीत, चुटकले आदि क द्वारा संचार व्यक्ति अथवा समाज का मन बहलाता है, उसे आनंदित करता है।

सेल्स तथा विज्ञापन

आज के युग में व्यावसायिक उत्पादित वस्तु की अधिक से अधिक बिक्री हो तथा वह अधिकाधिक लोगों तक पहुँचे इसलिए विभिन्न दूरसंचार माध्यमों का उपयोग करते हैं। विज्ञापन के माध्यम से बाजार में आयी हुई नई–नई वस्तुओं की जानकारी मिलती हे, उसके मूल्य और स्तर के बारे में भी जानकारी उपभोक्ता के मन मे विष्वास पैदा करने के लिए विज्ञापन बहुत सहायक होते हैं। विज्ञापन वस्तुओं को खरीदने के लिए उपभोक्ता को मजबूर कर देते हैं।

उपरोक्त विवेचन क आधार पर कहा जा सकता है कि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए दूरसंचार महत्वपूर्ण कार्य करता है। "जिस समाज को देष–विदेष की विभिन्न गतिविधियाँ, स्थानिक घटनाएँ एवं अपने परिवेष की जानकारी नहीं होती वह कभी अपने राष्ट्र के विकास मे योगदान नहीं दे सकता। सरकार को भी अपना प्रषासन सफलतापूर्वक चलाने के लिए देष के कौने–कौने से यथार्थ जानकारी एवं समस्याओं का ज्ञान होना आवष्यक है, जिसकी पूर्ति संचार की प्रक्रिया अथवा दूरसंचार माध्यमों से ही संभव है।"

संचार माध्यम

संचार माध्यम संप्रेषक और ग्रहणकर्ता के बीच सेतु का कार्य करते हैं। यह अंग्रेजी शब्द डमकपं का हिन्दी पर्याय है, जिसका अर्थ है दो बिन्दुओं को जोड़ने वाला। संप्रेषक अर्थपूर्ण संदेष को प्रभावषाली ढ़ंग से ग्रहणकर्ता तक पहुँचाने

के लिए जिस माध्यम का उपयोग करता है, वहीं संचार माध्यम है। ज्ञानेन्द्रियों के आधार पर संचार माध्यम को निम्नांकित तीन वर्ग में बाँट सकते हैं–

(क) दृष्य संचार माध्यम : पत्र–पत्रिकाएँ, पोष्टर, चार्ट, फोटोग्राफ, कार्टून, स्लाईड, साहित्य आदि।

(ख) श्रव्य संचार माध्यमः आकाषवाणी, टेपरिकॉर्डर, भाषण, लाउडस्पीकर आदि।

(ग) दृष्य–श्रव्य संचार माध्यमः फिल्म, टी0वी0, नाटक, नौटंकी, ड्रामा आदि।

हैराल्ड तासवेल ने संचार माध्यमों का अध्ययन करते हुए उनके मुख्य कार्यों को इस प्रकार निरूपति किया है– "सूचना संग्रह, प्रसार, विष्लेषण, सामाजिक ज्ञान एवं मूल्यों का प्रेषण। इनके अलावा वर्तमान सामाजिक आवष्यकता के आधार पर मनोरंजन को भी संचार माध्यम का कार्य माना जा सकता है।"

दूरदर्शन

टेलीविजन अथवा दूरदर्षन जनसंचार का सर्वाधिक प्रभावषाली एवं सषक्त माध्यम माना जाता है। टेलीविजन संचार प्रणाली में ध्वनि के साथ–साथ चित्रों के माध्यम से सूचना, समाचार एवं संदेष प्रसारित किए जाते हैं। नई–नई तकनीकों का प्रयोग करते हुए यह माध्यम घर बैठे सूचना, समाचार, षिक्षा, मनोरंजन सभी कुछ एक साथ दे सकता है। टेलीविजन पर किसी भी धटना, विचार या कथानक को रंगी चित्रों और ध्वनियों के माध्यम से इतने प्रभावत्मक रू‍प से प्रदर्षित किया जाता है कि बिना कोई कठिनाई के प्रेषित संदेष दर्षक के मन पस्तिष्क में सीधा उतर जाता है। जहाँ प्रेस और रेडियों की अपनी कुछ सीमाएँ थी वहीं दूरदर्षन के आविष्कार ने संचार जगत में अदभूत परिवर्तन लाया। इस माध्यम के जरिए विभिन्न सूचना, षिक्षा, समाचार, मनोरंजन सभी कुछ आकर्षक रूप में प्रदर्षित किया जाता है।

अन्य संचार माध्यमों की तुलना में टेलीविजन जहाँ संचार के क्षेत्र में अत्यन्त प्रभावकारी एवं लोकप्रिय सिद्ध हुआ है, वहीं उसका सबसे बड़ा दोष यह माना जाता है कि वह दर्षकों को निष्किय और अकर्मण्य बना देता है, उसकी सोचने की शक्ति को खत्म कर देता है, क्योंकि टेलीविजन देखते समय दर्षक के लिए अवकाष नहीं मिलता। इसलिए इसे 'ईडिएट बॉक्स' भी कहा जाता है। दूसरा दोष यह माना जाता है कि इसके सस्ते मनोरंजन के कार्यक्रमों के कारण गलत जीवनमूल्यों पर हिंसात्मक प्रवृत्ति को तेजी से बढ़ावा मिला है। इन कुछ दोषों क बावजूद भी आधुनिक संचार क्रांति में टेलीविजन की भूमिका निर्णायक है। तमाम रूढ़ियों और अंधविष्वासों तथा गलत परंपराओं पर प्रहार कर समाज में जागृति लाने का सार्थक प्रयास टेलीविजन के माध्यम से किया जा रहा है, इसे स्वीकारना ही होगा।

जनसंचार माध्यमों का स्वरूप संचार माध्यम'

"संचार प्रक्रिया में संप्रेषक जब अर्थपूर्ण संदेष को अत्यंत प्रभावी रूप से ग्रहणकर्ता तक पहुँचाने के लिए जिस माध्यम का उपयोग करता है उसे संचार माध्यम कहा जाता है। 'माध्यमों' के लिए आज कल 'मीडिया' शब्द अधिक प्रचलित है, जिसका अर्थ है दो बिन्दुओं को जोड़ने वालां वक्ता और श्रोता को एक कड़ी जोड़ती है उस कड़ी को हम 'संचार माध्यम' के नाम से पुकारते हैं। संचार की प्रक्रिया में अनेक जनसंचार के माध्यम अत्यंत प्रभावी रूप से अपना कार्य करते हैं, जैसे पत्र–पत्रिकाएँ, आकाषवाणी, दूरदर्षन, दूरभाषा,तार, पत्र, कम्प्यूटर, मोबाइल इत्यादि माध्यम संचार माध्यमों के अन्तर्गत आते हैं।

आरंभिक काल से ही मनुष्य अपनी भावनाओं एवं विचारों को अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के लिए विभिन्न संचार माध्यम की सहायता होने लगा, जिससे यह संचार प्रक्रिया अधिक प्रभावकारी सिद्ध हुई। आरंभिक काल में परम्परागत जनसंचार माध्यमों के द्वारा संदेष लोगों तक पहुँचाया जाता था। इनमें संकीर्वन, रासलीला, लोकनृत्य, लोकसंगीत,

नोटंकी, रंगमंच, चित्रकला, मूर्तिकला, साहित्य आदि प्रभावी जनमाध्यम थे। आधुनिक युग में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हमने बहुत प्रगति की है। आज विज्ञान ने हमें नवीन सुविकसित संचार माध्यम प्रदान किए हैं। यह युग 'सेटेलाइट' युग है। सामान्य वार्तालाप से लेकर टेलीफोन, मोबाइल, फोन, रेडियो, टेलीजिवन, कम्प्युटर, इंरटनेट, सी0डी0 तक न जाने कितने ही संचार माध्यम है, जो सूचना के प्रसार का काम कर रहे हैं। हमारी आवष्यकतानुसार हम इन संचार माध्यमों का उपयोग करते हैं।

उपरोक्त विवेचन के आधार पर संचार माध्यमों को दो वर्गों में रख सकते हैं–परपरागत संचार माध्यम और आधुनिक संचार माध्यम ।इन दोनों संचार प्रकारों का वि स्तृत एवं विकसात्मक परिचय निम्न रूप में दिया जा रहा है–

परंपरागत संचार माध्यम'

आँचलिक क्षेत्र में प्रचलित जनजातीय संस्कृति को लोक संस्कृति के नाम से जाना जाता है। यह लोक संस्कृति लोकगीतों, कथाओं, कहावतों, रीति–रिवाजों, मेलों, ऋतु–पवों के रूप में प्रचलित होती हैं। मनुष्य विकास की आरंभिक सांस्कृतिक परंपरा को देखा जाय तो यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन युग में एक दूसरे के साथ वार्तालाप करके ही विचारों का परस्पर आदान–प्रदान होता था। लोक कथाएँ, लोकगीत एवं लोकनाट्यों के माध्यम से सामाजिक मूल्यों और आदर्षों का संप्रेषित किया जाता था। यह सभी सांस्कृतिक उपादान जो परंपरागत जनसंचार के माध्यम थे, वह व्यापक जनसमूह को एकसूत्र में बाँधे रखने का महत्वपूर्ण दायित्व निभाते थे।

भारत की अधिकांष जनसंख्या ग्रामीण भाग में रहती है गॉव में जब कभी पर्वोत्सव एवं कोई विषिष्ट अवसर होता है, तो वहां के लोग लोकगीत, लोकनृत्य एवं लोकनाट्य के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक परंपरा का परिचय देते हैं। "अनुमानतः भारत में विभिन्न प्रदेषों और विभिन्न अवसरों पर प्रस्तुत किए जाने वाले 500 लोकनृत्य प्रचलित हैं।" अधिकांष लोकनृत्य कृषि कर्म, फसलों, के तैयार होने पर, ऋतुओं के उल्लास और मांगलिक पर्वो पर प्रस्तुत किए जाते हैं। पंजाब का भांगडा, गुजरात का गरबा, महाराष्ट्र का लावणी आदि राज्यों के लोकनृत्य पारंपरिक समूह संचार का प्रमाण है। लोकगीतों की गायन मण्डलियाँ समूह में गॉव–गॉव घुमकर जब अपने गीत प्रस्तुत करती है तो संदेष सहज भाव से आम लोगों के दिलों में उतर जाते हैं। कथा वाचन, भजन–कीर्तन आदि कार्यक्रमों द्वारा लोगों को अपने पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय दायित्वों के प्रति सचेत कर उन्हें सुखमय जीवन जीने के संस्कार दिए जाते थे। परंपरागत संचार माध्यमों ने एक तरह से भारत की संस्कारषील संस्कृतिक को जीवित रखने का कार्य किया है।

प्रंपरागत जनसंचार माध्यम किसी भी संदेष को जनता तक अत्यंत सरल, सुगत एवं सुलभता से पहुँचाने का कार्य करते हैं, इसलिए इन माध्यमों को समाजिक जनजागृति का प्रभावी संवाहक माना जा सकता है। परंपरागत जनसंचार माध्यमों की सार्थकता एवं प्रभावी उपयोगिता भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के समय सिद्ध हुई थी, जब गॉव–गॉव की सड़कों पर निकलने वाली प्रभात फेरिया नौटंकियाँ, प्रेरक गीत, कविताएँ, स्वागों ने जन आंदोलन की लौ लगातार प्रज्वलित रखी थी।

समाज में प्रचलित अंधविष्वास जैसे कुप्रथाएँ हो तथा अन्य समाजविद्यातक समस्याएँ हो जैसे बालविवाह, जनसंख्या विस्फोट, निरक्षरता, नषा, मदिरापन, सांप्रदायिक विद्वेष, कुपोषण, अस्वच्छता, जाति–प्रथा, दहेज–प्रथा आदि समस्याओं के प्रति सामान्य जन को जागरूक बनाने में जितना परंपरागत जनमाध्यमों ने सषक्त रू‍प से कार्य किया

है, उतना अन्य माध्यम सफल नहीं हो पाए हैं। "युनेस्को की रिपोर्ट में भी परंपरागत संचार माध्यमों को समकालीन मुद्दों के प्रति जागरूक बनाने में सक्षम पाया है।"

परंपरागत संचार माध्यमों का कार्य केवल सूचना देने तक ही सीमित नहीं था। यह माध्यम जनता तक अपना संदेष सफलतापूर्वक एवं प्रभावकारी रूप से पहुँचाने के लिए प्राचीन एवं आधुनिक दोनों पद्धतियों का प्रयोग करता है।

इसलिए यह माध्यम एक ओर तो मनोरंजन के साथ–साथ सांस्कृतिक परंपरा के प्रति आत्मीयता निर्माण करते हैं, तो दूसरी ओर नैतिक शिक्षा देने का कार्य भी प्रमुखता से करते हैं।

पारंपरिक संचार की प्रमुख विषेषता उसकी स्रोत से निकटता, स्थानीयता और विष्वनीयता है। जनसामान्य की भाषा में दैनंदिन जीवन के माहौल में कही गई बात के कारण संदेष निष्चित रूप से प्रभावकारी होता है। परंपरागत संचार माध्यमों में उपभोक्तावाद का कपट नहीं होने से सहज भाव एवं सरल भाषा में दिया गया संदेष इतना शक्तिषाली होता है कि वह सीधा हृदय को स्पर्ष करता है। जिससे व्यक्ति तुरंत प्रभावित हो जाता है। इस माध्यम की तीव्र प्रभावकारिता के कारण ही स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में महाराष्ट्र में 'तमाषा' प्रतिबंधित किया गया था। लेकिन आज सरकार के स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग तथा समाजकल्याण विभाग अपनी नई योजनाओं को पारंपारिक माध्यमों से प्रसारित कर रहे हैं, और इसके सकारात्मक परिणाम भी उन्हें मिले हैं। अतः कहा जा सकता है कि आज के रेडियों और दूरदर्षन जैसे जनसंचार माध्यम पारंपरकि संचार के ही विकसित रूप हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत छात्राओं के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। निष्कर्ष निकलता है कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत नियमित विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। कि उच्च शिक्षा में अध्ययनरत पत्राचार विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उच्च शिक्षा में अध्ययनरत परम्परागत विषयों विद्यार्थियों के शैक्षिक उन्मुखीकरण पर दूर संचार माध्यमों का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

संदर्भ

1ण बहलए एस0एस0 (1996) दूरस्थ षिक्षाः अवधारणा एवं प्रणाली भारतीय आधुनिक षिक्षा, अक्टूबरए पृष्ठ–19

2ण गर्ग, एस0 (2005), भारत में सेवाकालीन अध्यापक प्रषिक्षण हेतु शैक्षणिक उपग्रह व आई0टी0 सम्वनय तन्त्र, अन्वेषिकः षिक्षक–शिक्षा की भारतीय पत्रिका, 2(1),जून।

3ण राय, पी0एन0 (1987), अनुसंधान परिचय, आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेषन।

4ण शुक्ला, एस0पी0 (1983), शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।

5ण शुक्ल, पी0 (1992), शैक्षिक दूरदर्षन के उपयोग की प्रासंगिकता, भारतीय आधुनिक षिक्षा, जुलाई, पृष्ठ 55–58

6ण लल, आर0बी0 (2006), भारतीय शिक्षा का विकास एवं उसकी समस्याएं, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेषन्स।

7ण सक्सेना, एन0आर0एस0 एवं चतुर्वेदी, एस0 (2006), उदीयमान भारतीय समाज में षिक्षक, मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।

8ण कपिल, एच0के0 (1993), सांख्यिकी के मूल तत्व, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

9ण गुप्ता, एस0पी0 (2005), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।

10ण पचौरी, जी0 (2008), उदीयमान भारतीय समाज में षिक्षक, मेरठ : लायल बुक डिपो।

11ण लाल, आर0बी0 (2007), षिक्षक के दार्षनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ : रस्तोगी पब्लिकेषन्स।

12ण लाल, आर0बी0 एवं जोषी, एस0सी0 (2005) मापन मूल्यांकन एवं सांख्यिकी, मरेठ : रस्तोगी पब्लिकेषन्स।

13ण मिश्र, पी0के0 (2005), एजुसैट–पृष्ठभूमि, प्रासंगिकता एवं चुनौतियां, भारतीय आधुनिक षिक्षा, 23(4), अप्रैल 2005

14ण छाबड़ा, पी0 (2005), सहयोगी अधिगम–एक नवाचार, भारतीय आधुनिक षिक्षा, 23(4), अप्रैल 2005, 35–56

15ण सागर, ए0 (2006), प्राथमिक विद्यालयों में ऑडियो कार्यक्रमों के उपयोग के विविध आयाम–एक अध्ययन, प्राथमिक षिक्षक, जनवरी, 66–72